INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 7, July 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

बौद्ध दर्शन में शील, समाधि और प्रज्ञा का वर्तमान मूल्य शिक्षा में अनुप्रयोग

आनंद मोहन[1]

शोधार्थी, संकाय शिक्षा विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

प्रो. राजीव कुमार[2]

सह-प्राध्यापक,दर्शन विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

Email: anandmohan8083@gmail.com

शोध-सार

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ज्ञानार्जन के साथ-साथ मूल्य और नैतिकता का विकास एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र बन गया है। आधुनिक शिक्षा तकनीकी और व्यावसायिक कौशल पर अधिक केंद्रित है, जिससे छात्रों में सामाजिक, नैतिक और चारित्रिक गुणों का विकास अक्सर सीमित रह जाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य बौद्ध दर्शन आधारित शिक्षा के मूल्यपरक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता और महत्व का मूल्यांकन करना है। बौद्ध दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि शील (नैतिकता), प्रज्ञा (ज्ञान) और समाधि (मानसिक अनुशासन) के माध्यम से व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है। अध्ययन में दस्तावेजीय और साहित्य समीक्षा विधि अपनाई गई, जिसमें त्रिपिटक, धम्मपद सहित बौद्ध शिक्षण ग्रंथों और आधुनिक शैक्षिक शोध पत्रों का विश्लेषण किया गया। शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा छात्रों में करुणा, मैत्री, संयम, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों के विकास में सहायक है। यह दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों के संकट को दूर करने और छात्रों को संपूर्ण व्यक्तित्व और सामाजिक चेतना प्रदान करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है। अध्ययन सुझाव देता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षण पद्धति को सम्मिलित करना छात्रों के नैतिक और चारित्रिक विकास के लिए उपयोगी और आवश्यक है।

मुख्य शब्द: बौद्ध दर्शन, मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, चारित्रिक शिक्षा, आधुनिक शिक्षा, शैक्षिक प्रासंगिकता, सामाजिक मूल्यों का विकास

परिचय

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा की प्रासंगिकता का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण विषय है। आज की शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से तकनीकी ज्ञान, करियर उन्मुखी कौशल और आर्थिक सफलता पर केंद्रित है, लेकिन इसमें नैतिकता, करुणा, ध्यान और आंतरिक शांति जैसे मूल्यों की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बौद्ध दर्शन, जो गौतम बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित है, दुख के कारणों का विश्लेषण करता है और निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग बताता है। इसके मूल सिद्धांत जैसे चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद और अहिंसा आज की तेज़ रफ़्तार वाली दुनिया में मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक सद्भाव और नैतिक विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

बौद्ध दर्शन आधारित शिक्षा केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करती है। यह शिक्षा व्यक्ति को स्वयं को समझने, दूसरों के प्रति करुणा विकसित करने और जीवन की वास्तविकता को स्वीकार करने की क्षमता प्रदान करती है। प्राचीन भारत में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे, जहां हजारों विद्यार्थी विभिन्न देशों से

आकर ज्ञान प्राप्त करते थे। वहां शिक्षा न केवल धार्मिक थी, बल्कि विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा और कला जैसे विषयों पर भी थी। आज की शिक्षा में तनाव, प्रतिस्पर्धा और नैतिक पतन की समस्याओं को देखते हुए बौद्ध मूल्यों की शिक्षा को शामिल करना आवश्यक हो गया है।यह प्रस्तावना बौद्ध दर्शन की मूल अवधारणाओं से शुरू होकर वर्तमान शिक्षा की कमियों और बौद्ध शिक्षा की संभावनाओं पर प्रकाश डालेगी। बौद्ध शिक्षा मूल्यपरक है, जो व्यक्ति को केवल नौकरी नहीं, बल्कि एक बेहतर इंसान बनाती है। आधुनिक समय में जहां मानसिक रोग बढ़ रहे हैं, ध्यान और माइंडफुलनेस जैसे बौद्ध अभ्यास वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हैं। इस मूल्यांकन में हम देखेंगे कि बौद्ध दर्शन कैसे शिक्षा को अधिक मानवीय और संतुलित बना सकता है।बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता इसलिए बढ़ गई है क्योंकि आज की शिक्षा भौतिकवाद पर आधारित है, जबकि बौद्ध शिक्षा आध्यात्मिक और नैतिक संतुलन पर। चार आर्य सत्यों के अनुसार जीवन में दुख है, उसके कारण हैं (तृष्णा, अविद्या), दुख का निरोध संभव है और अष्टांगिक मार्ग उसका उपाय है। यह मार्ग सम्यक दृष्टि, संकल्प, वाणी, कर्म, आजीविका, प्रयास, स्मृति और समाधि पर आधारित है। इन मूल्यों को शिक्षा में शामिल करने से विद्यार्थी न केवल सफल होंगे, बल्कि खुश और शांतिपूर्ण जीवन जी सकेंगे।वर्तमान में भारतीय शिक्षा प्रणाली रटंत विद्या, परीक्षा केंद्रित और बेरोजगारी उत्पन्न करने वाली है। ड्रॉपआउट दर उच्च है, शिक्षकों की कमी है और गुणवत्ता कम है। ऐसे में बौद्ध शिक्षा का ध्यान आधारित दृष्टिकोण, जो माइंडफुलनेस सिखाता है, तनाव कम करने और एकाग्रता बढ़ाने में सहायक हो सकता है। बौद्ध दर्शन अनीश्वरवाद, क्षणिकवाद और अनात्मवाद पर आधारित है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। यह शिक्षा जाति, लिंग या धर्म से ऊपर उठकर सभी के लिए समान अवसर प्रदान करती थी, जो आज की समावेशी शिक्षा की मांग से मेल खाती है।इस मूल्यांकन का उद्देश्य यह दिखाना है कि बौद्ध मूल्यपरक शिक्षा न केवल प्रासंगिक है, बल्कि आवश्यक भी है। यह शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है और समाज को करुणा से भरती है। प्राचीन नालंदा जहां 10,000 विद्यार्थी पढ़ते थे, वहां शिक्षा का स्तर इतना उच्च था कि विश्व भर से लोग आते थे। आज फिर से ऐसे मूल्यों की आवश्यकता है। बौद्ध दर्शन कहता है कि सब कुछ परिवर्तनशील है, इसलिए शिक्षा भी बदलते समय के अनुरूप होनी चाहिए। वर्तमान में कोविड जैसी महामारियों ने मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया है, जहां ध्यान और करुणा जैसे बौद्ध सिद्धांत सहायक सिद्ध हो सकते हैं।बौद्ध शिक्षा पंचशील (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) पर आधारित है, जो नैतिक आधार प्रदान करती है। आज की शिक्षा में भ्रष्टाचार, हिंसा और असंतोष बढ़ रहा है, क्योंकि मूल्य शिक्षा की कमी है। बौद्ध दर्शन प्रतीत्यसमुत्पाद सिखाता है कि सब कुछ एक दूसरे पर निर्भर है, जो पर्यावरण शिक्षा और वैश्विक सद्भाव के लिए प्रासंगिक है।यह प्रस्तावना आगे के अध्यायों की नींव रखती है, जहां हम बौद्ध दर्शन के सिद्धांतों, वर्तमान शिक्षा की समस्याओं, प्राचीन बौद्ध शिक्षा की विशेषताओं और आधुनिक संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता का विस्तार से विश्लेषण करेंगे। अंत में निष्कर्ष निकालेंगे कि बौद्ध मूल्यपरक शिक्षा को मुख्यधारा में शामिल करना समय की मांग है। यह शिक्षा न केवल भारत बल्कि विश्व के लिए एक मॉडल बन सकती है, जहां शांति और करुणा की शिक्षा हो।वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करने वाले इस अध्ययन का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह केवल एक शैक्षणिक विश्लेषण नहीं है, बल्कि समकालीन समाज की गहन समस्याओं का समाधान खोजने का एक प्रयास है। आज की दुनिया तेज़ी से बदल रही है, जहां तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और भौतिकवाद ने शिक्षा को मुख्य रूप से करियर-उन्मुख और प्रतिस्पर्धात्मक बना दिया है। इससे विद्यार्थियों में मानसिक तनाव, अवसाद, नैतिक पतन और सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। ऐसे में बौद्ध दर्शन, जो करुणा, ध्यान, अहिंसा और आंतरिक शांति पर आधारित है, शिक्षा को अधिक मानवीय, संतुलित और मूल्यपरक बनाने की क्षमता रखता है। इस अध्ययन का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट होता है

सर्वप्रथम, यह अध्ययन मानसिक स्वास्थ्य की वर्तमान संकट से निपटने में सहायक है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में परीक्षा का दबाव, प्रतिस्पर्धा और सफलता की अंधी दौड़ ने विद्यार्थियों में चिंता, तनाव और आत्महत्या की दर को बढ़ा दिया है। भारत में

हर वर्ष हजारों विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से आत्महत्या करते हैं। बौद्ध दर्शन का ध्यान (माइंडफुलनेस) और सम्यक स्मृति जैसे सिद्धांत वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हैं कि वे मस्तिष्क की संरचना को बदलकर तनाव कम करते हैं और एकाग्रता बढ़ाते हैं। इस अध्ययन से नीति-निर्माताओं को यह समझ आएगी कि शिक्षा में ध्यान और करुणा की शिक्षा शामिल करके हम एक स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं। यह महत्व इसलिए है क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य अब वैश्विक महामारी बन चुका है, और बौद्ध दृष्टिकोण इसका प्राकृतिक उपचार प्रदान करता है।दूसरा, अध्ययन नैतिक शिक्षा की कमी को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान शिक्षा ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, लेकिन नैतिकता, ईमानदारी और करुणा नहीं सिखाती। इससे समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, पर्यावरण विनाश और सामाजिक विभेद बढ़ रहा है। बौद्ध दर्शन के पंचशील (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और ब्रह्म विहार (मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा) जैसे सिद्धांत विद्यार्थियों को नैतिक आधार प्रदान करते हैं। यह अध्ययन दिखाएगा कि इन मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने से न केवल व्यक्ति बेहतर बनेगा, बल्कि समाज भी सद्भावपूर्ण होगा। आज के समय में जहां सोशल मीडिया से नफरत और विभाजन फैल रहा है, करुणा आधारित शिक्षा सामाजिक एकता को मजबूत करेगी। इस अध्ययन का महत्व यहां है कि यह शिक्षा को केवल नौकरी का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का माध्यम बनाएगा।तीसरा, यह अध्ययन पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के संदर्भ में प्रासंगिक है। बौद्ध दर्शन का प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत बताता है कि सब कुछ एक-दूसरे पर निर्भर है। इससे पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता पैदा होती है। वर्तमान शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा सैद्धांतिक है, लेकिन बौद्ध दृष्टिकोण इसे व्यावहारिक बनाता है, जहां अहिंसा सभी जीवों तक विस्तारित होती है। जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण की समस्या में यह अध्ययन सुझाव देगा कि बौद्ध मूल्यों से विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनें। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में भी शांति और करुणा जैसे तत्व शामिल हैं, जो बौद्ध दर्शन से मेल खाते हैं। इस अध्ययन का महत्व वैश्विक स्तर पर है, क्योंकि यह भारत को पर्यावरण शिक्षा का मॉडल बना सकता है।चौथा, अध्ययन समावेशी और समान शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है। प्राचीन बौद्ध शिक्षा प्रणाली (जैसे नालंदा) में जाति, लिंग या धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं था। महिलाएं और विभिन्न देशों के विद्यार्थी समान रूप से पढ़ते थे। वर्तमान भारत में अभी भी ग्रामीण-शहरी विभेद, लिंग असमानता और आरक्षण जैसे मुद्दे हैं। बौद्ध दर्शन का अनात्मवाद और समानता का सिद्धांत शिक्षा को अधिक समावेशी बनाएगा। यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के मूल्य शिक्षा के लक्ष्यों को मजबूत करेगा, जहां बहुभाषिकता और सांस्कृतिक विविधता पर जोर है। इसका महत्व इसलिए है कि यह शिक्षा को लोकतांत्रिक और सभी के लिए सुलभ बनाएगा।पांचवां, यह अध्ययन आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। बौद्ध दर्शन मध्यम मार्ग सिखाता है, जो अत्यधिक भौतिकवाद से बचाता है। आज की शिक्षा बेरोजगारी उत्पन्न कर रही है, क्योंकि वह केवल डिग्री पर केंद्रित है। बौद्ध शिक्षा आत्मनिर्भरता, कौशल और संतोष सिखाती है। इससे विद्यार्थी उद्यमी और संतुष्ट बनेंगे। अध्ययन से पता चलेगा कि ध्यान आधारित शिक्षा रचनात्मकता और समस्या समाधान की क्षमता बढ़ाती है, जो आर्थिक विकास के लिए जरूरी है।अंत में, इस अध्ययन का सबसे बड़ा महत्व यह है कि यह प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित करता है। भारत बौद्ध दर्शन की जन्मभूमि है, लेकिन आज हम पश्चिमी मॉडलों पर निर्भर हैं। यह अध्ययन सांस्कृतिक पुनरुत्थान का माध्यम बनेगा और विश्व स्तर पर भारत को शांति और करुणा की शिक्षा का केंद्र बना सकता है। जैसे थाइलैंड, जापान और श्रीलंका में बौद्ध मूल्य शिक्षा में शामिल हैं, वैसे भारत में भी हो सकता है।इस प्रकार, यह अध्ययन केवल शैक्षणिक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन है। यह शिक्षा को पूर्ण बनाकर एक बेहतर विश्व की नींव रखेगा, जहां ज्ञान के साथ करुणा और शांति हो। अध्ययन की यह प्रासंगिकता समय की मांग है, और इसके निष्कर्ष शिक्षा नीति, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए मार्गदर्शक होंगे।

साहित्य की समीक्षा

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास पर केंद्रित है। विद्वानों के अनुसार, बौद्ध शिक्षा में नैतिकता (शील), मानसिक अनुशासन (समाधि) और ज्ञान (प्रज्ञा) के माध्यम से छात्रों में मूल्यपरक गुणों का विकास किया जाता है। धर्म, करुणा, मैत्री और संयम जैसे मूल्यों का समावेश बौद्ध शिक्षा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी प्रासंगिक बनाता है।कई शोधों ने यह उल्लेख किया है कि बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा छात्रों के सामाजिक और नैतिक चेतना के विकास में सहायक होती है। शर्मा (2016) के अनुसार, बौद्ध शिक्षा छात्रों को केवल नियमों का पालन करना नहीं सिखाती, बल्कि उन्हें आत्मनिरीक्षण और आत्मसंयम के माध्यम से नैतिक निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा केवल शैक्षिक नहीं बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया बन जाती है।अध्ययनकर्ताओं के मतानुसार, बौद्ध दर्शन में नैतिक और चारित्रिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के सदाचार, करुणा, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है। कुमार (2020) ने अपने शोध में पाया कि बौद्ध शिक्षण प्रणाली में नैतिक मूल्यों और चारित्रिक प्रशिक्षण को व्यवहारिक जीवन में उतारने पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिससे छात्रों में सकारात्मक आचरण और सामाजिक समरसता का निर्माण होता है।समीक्षित साहित्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जहां तकनीकी और अकादमिक दक्षता पर अधिक जोर है, वहां मूल्यपरक शिक्षा की कमीछात्रों के मानसिक और सामाजिक विकास को प्रभावित कर सकती है। दलाई लामा (2015) के अनुसार, बौद्ध मूल्यपरक दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा में नैतिकता, करुणा और चारित्रिक विकासको सुनिश्चित करने में प्रभावी हो सकता है।संपूर्ण समीक्षा साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा आज की शिक्षा व्यवस्था में अत्यंत प्रासंगिक है। यह छात्रों में मूल्य, नैतिकता और चारित्रिक गुणों के विकास के साथ-साथ एक सशक्त, संतुलित और समाजोपयोगी व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है। शोधकर्ताओं का मत है कि आधुनिक शिक्षा में बौद्ध मूल्यपरक दृष्टिकोण को अपनाना न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास बल्कि समाज में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए भी आवश्यक है।

उद्देश्य

1. **बौद्ध दर्शन में मूल्यपरक शिक्षा** की अवधारणा और उसके मूल तत्वों का अध्ययन करना।
2. बौद्ध दर्शन आधारित शिक्षा में **नैतिक और चारित्रिक शिक्षा** के महत्व और प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में **मूल्य और नैतिकता के अभाव** की समस्याओं की पहचान करना।
4. बौद्ध मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम से **छात्रों के व्यक्तित्व और सामाजिक गुणों** के विकास की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
5. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में **बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक दृष्टिकोण** को समाहित करने के संभावित उपायों और नीतिगत सुझावों का निर्धारण करना।

परिकल्पनाएँ

1. बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा छात्रों में **नैतिक और चारित्रिक गुणों** के विकास में सहायक होती है।
2. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक दृष्टिकोण **मूल्य और सामाजिक चेतना** के अभाव को कम करने में प्रभावी है।
3. बौद्ध दर्शन की मूल्यपरक शिक्षा छात्रों के **व्यक्तित्व और सामाजिक उत्तरदायित्व** को सुदृढ़ बनाने में सकारात्मक योगदान देती है।

4. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा को शामिल करने से **संपूर्ण और संतुलित व्यक्तित्व निर्माण** संभव है।

शोध-विधि

यह अध्ययन गुणात्मक और वर्णनात्मक प्रकार का है। इसका मुख्य उद्देश्य बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। अध्ययन में शिक्षा के नैतिक, चारित्रिक और मूल्यपरक पहलुओं का गहन अध्ययन किया गया, ताकि छात्रों के व्यक्तित्व और सामाजिक गुणों पर इसके प्रभाव को समझा जा सके।इस शोध में मुख्य रूप से दार्शनिक और साहित्यिक शोध विधि का प्रयोग किया गया। इसमें बौद्ध दर्शन, मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक शिक्षा और चारित्रिक शिक्षा से संबंधित ग्रंथ, लेख, शोध पत्र और शैक्षिक रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया। शोध का उद्देश्य बौद्ध शिक्षण के सिद्धांतों और आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में उनके महत्व का तुलनात्मक अध्ययन करना है।अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया। प्राथमिक स्रोतों में त्रिपिटक, धम्मपद, बौद्ध ग्रंथ और धार्मिक शिक्षाएँ शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में बौद्ध दर्शन और आधुनिक शिक्षा से संबंधित शोध पत्र, जर्नल, पुस्तकें और ऑनलाइन डेटाबेस शामिल किए गए। इन स्रोतों से बौद्ध मूल्यपरक शिक्षा की विशेषताएँ और आधुनिक शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता पर डेटा एकत्रित किया गया।यह शोध मुख्यतः सैद्धांतिक और साहित्य आधारित है। इसमें अनुभवजन्य डेटा एकत्रित करने की प्रक्रिया शामिल नहीं है। अध्ययन की सीमाएँ समय, संसाधन और उपलब्ध साहित्य तक सीमित हैं। इसके बावजूद, शोध बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता और योगदान को स्पष्ट रूप से समझने में सहायक है।

निष्कर्ष

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में केवल ज्ञान और कौशल पर जोर देने के बजाय मूल्यपरक शिक्षा का समावेश अत्यंत आवश्यक है। बौद्ध दर्शन की शिक्षाएँ जैसे अहिंसा, करुणा, संयम, समता और न्याय, छात्रों में नैतिक और सामाजिक चेतना विकसित करने में सहायक हैं। ऐसे मूल्य बच्चों और युवाओं को केवल अकादमिक सफलता नहीं, बल्कि जीवन के प्रति जिम्मेदार और संवेदनशील दृष्टिकोण भी प्रदान करते हैं।आज के समाज में हिंसा, असमानता और मानसिक तनाव बढ़ रहे हैं। बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा सामाजिक सहयोग, सहिष्णुता और मानसिक स्थिरता को बढ़ावा देती है। जब विद्यार्थियों में करुणा और अहिंसा जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाती है, तो वे व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तर पर सकारात्मक योगदान देने में सक्षम होते हैं।बौद्ध दर्शन केवल समाज के लिए ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होता है। ध्यान, आत्म-निरीक्षण और मानसिक अनुशासन जैसी प्रथाएँ छात्रों में आत्मसात, धैर्य और मानसिक संतुलन को विकसित करती हैं। इससे उनकी निर्णय क्षमता, तनाव प्रबंधन और जीवन के प्रति दृष्टिकोण अधिक संतुलित बनता है। इस प्रकार, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बौद्ध दर्शन आधारित मूल्यपरक शिक्षा का समावेश न केवल आवश्यक है, बल्कि अत्यंत प्रासंगिक भी है। यह शिक्षा प्रणाली को केवल ज्ञान पर आधारित नहीं, बल्कि मानव जीवन और समाज के समग्र विकास पर केंद्रित बना सकती है। यही कारण है कि भविष्य की शिक्षा नीति में मूल्यपरक शिक्षा को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

संदर्भ-सूची

1. शैलेंद्र, टी. एस. एम. (2025). नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए बौद्ध शिक्षा प्रणाली ... जर्नल बुद्धि पेकरती धर्म बुद्ध।
2. बखाती, पी. (2017). शांति के लिए औपचारिक शिक्षा में मूल्य आधारित शिक्षा का एकीकरण ... लोग: इंट. जर्नल।
3. सुमार्यति. समकालीन शिक्षा में बौद्ध नैतिक दर्शन। RUDN जर्नल ऑफ़ फिलॉसफी।
4. इस्तिगफ़ारानी, ए. जी., एट अल. समकालीन शिक्षा में बौद्ध मूल्यों का अनुप्रयोग ... इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोसाइटी रिव्यूज़।
5. कलिता, पी. (2020). बौद्ध धर्म के शैक्षिक और नैतिक मूल्यों का एक विश्लेषण। पालआर्च का जर्नल।
6. शुक्ला, ए., और महतो, एस. के. (2021). मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता एवं
7. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT). मूल्यपरक शिक्षा (2025).

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.